

● सुनो, पढ़ो और गाओ :

५. बसंत गीत

- चंद्रप्रकाश 'चंद्र'

जन्म : ३ अक्टूबर १९५७, बुलंदशहर (उ.प्र.) रचनाएँ : खयाल ऊपर और ऊपर (लघुकथा), टेलीफिल्म, गीत, बालगीत आदि ।
परिचय : चंद्रप्रकाश 'चंद्र' जी कवि, लेखक, निर्देशक, अभिनेता, बहुप्रतिभा के धनी हैं । आपने विविध पत्र-पत्रिकाओं में लेखन किया है ।
प्रस्तुत गीत में कवि ने वसंत ऋतु में होने वाले परिवर्तन, प्रभाव और प्राणियों में फैले उल्लास को दर्शाया है ।



सजि आयो रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।

अजी गाओ रे, ऋतु बसंत सजि आयो ॥

कलि-कलि करत कलोल कुसुम मन, मंद-मंद मुस्कायो ।

गुन-गुन-गुन-गुन गूँजे मधुप गन मधु मकरंद चुरायो ॥

सजि आयो रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।

अजी गाओ रे, ऋतु बसंत सजि आयो ॥

बन-बन-बाग-बाग-बगियन में, सुहनि सुगंध उड़ायो ।

ठुमकि-ठुमकि मयूरा नाचत, गीत कोयलिया गायो ॥

सजि आयो रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।

अजी गाओ रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।

पीली-पीली सरसों फूली, अरु बौर अमवा पे छायो ।

हरी-हरी मटर बिछौने ऊपर अमित रंग बरसायो ।

सजि आयो रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।

अजी गाओ रे, ऋतु बसंत सजि आयो ॥

□ उचित लय-ताल, के साथ गुट में गीत गवाएँ । मौसम के अनुसार होने वाले परिवर्तन पर चर्चा करें । कविता में आए गुन-गुन, बन-बन जैसे अन्य ध्वन्यात्मक शब्द बताने के लिए प्रेरित करें । अधोरेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में देखने के लिए प्रोत्साहित करें ।